भूमिका/प्रस्तावना
तत्त्वार्थसूत्रम्

प्रथम सदी के दिगम्बर जैनाचार्य उमास्वामी जी ''गिद्ध पिच्छाचार्य'' द्वारा रचित ''तत्त्वार्थ सूत्र'' संस्कृत भाषा का प्रथम ग्रंथ है, यह जैन न्याय, स्याद्वाद, सिद्धान्त पद्धति का प्रतिपादक सह ग्रंथ आचार्य भगवंत श्री कुंद-कुंद स्वामी के पट्ट शिष्य आचार्य उमास्वामी जी महाराज के कर-कमलों द्वारा प्राप्त हुआ था । विक्रम की प्रथम शताब्दी का अन्त एवं द्वितीय शताब्दी का पूर्वार्ध आपका समय रहा है, श्री वीर निर्माण संवत् 706-770 ईसवी सन् 179-243 में यह लिखा गया। इस ग्रंथ में 10 अध्याय हैं प्रथम अध्याय में 33 सूत्र हैं, जिसमें मोक्ष मार्ग की पीठिका 7 तत्त्वों का दिग्दर्शन और जीवों के ज्ञान का वर्णन है, दूसरे अध्याय में 53 सूत्र हैं, जिसमें जीवों के भावों का जन्म, योनि एवं शरीर का विशेष वर्णन किया गया है, तृतीय अध्याय में 39 सूत्र हैं, जिसमें जीवों के नरक एवं मध्यलोक संबंधी स्थानों का वर्णन किया गया है, चतुर्थ अध्याय में 42 सूत्र हैं जिसमें जीवों के स्वर्ग लोक का कथन किया गया है, पंचम अध्याय में 42 सूत्र हैं, जिसमें अजीव तत्त्व, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश एवं काल द्रव्य को दर्शाया गया है, षष्टम अध्याय में 27 सूत्र हैं, जिसमें आस्रव तत्त्व का कथन किया गया है, सप्तम अध्याय में 39 सूत्र हैं, जिसमें संवर स्वरूप व्रतों का कथन किया गया है, अष्टम अध्याय में 26 सूत्र हैं, जिसमें बंध तत्त्व का विवेचन किया गया है, नवम अध्याय के 47 सूत्रों में संवर एवं निर्जरा तत्त्व का कथन किया गया है, दशम अध्याय में 9 सूत्र हैं, जिसमें मोक्ष तत्त्व का विवेचन किया गया है। इस प्रकार कुल 357 सूत्र हैं। तत्त्वार्थ सूत्र पर सर्वप्रथम पाँचवीं शताब्दी में पूज्यपाद (देवनंदी जी) आचार्य ने ''सर्वार्थसिद्धि'' नामक संस्कृत टीका लिखी। तद्पश्चात सातवीं शताब्दी में ''अकलंक भट्टारक'' दिगम्बराचार्य ने ''सर्वार्थसिद्धि'' ग्रंथ पर ''राजवार्तिक'' नामक संस्कृत टीका लिखी एवं आचार्य विद्यानंद जी प्रथम ने आठवीं शताब्दी के उत्तराद्धं में राजवार्तिक के आधार से तत्त्वार्थसूत्र पर ''श्लोक वार्तिक'' नामक संस्कृत टीका लिखी। आचार्य समंतभद्र स्वामी जी ने गंधहस्ति महाभाष्य (अप्राप्य) और आचार्य श्रुतसागर जी ने ''तत्त्वार्थ वृत्ति'' लिखी है। इसके मंगलाचरण पर आचार्य समंतभद्र स्वामी ने आप्त मीमांसा, आचार्य अकलंक देव ने ''अष्टशती'' और आचार्य विद्यानंद स्वामी ने ''अष्ट सहस्री'' लिखी है। इस प्रकार और भी तत्त्वार्थ सूत्र पर अनेकों टीकायें लिखी गई। यह ग्रंथ इतना सम्मानीय बहुचर्चित महान एवं पूज्य है कि आज भी जैन श्रावक-श्राविकायें इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। आचार्य कुंदकुंद स्वामी का आचार्य पद उमास्वामीजी को मिला। 18 वर्ष में दीक्षा प्राप्त की 43 वर्ष में आचार्य पद पर आसीन हुए और 40 वर्ष 8 दिन तक आचार्य पद पर रहे। कुल आयु 84 वर्ष की रही। यह संस्कृत भाषा का सर्वप्रथम जैन ग्रंथ है। जिनागम के लगभग संपूर्ण विषयों की ''सूची'' इस ग्रंथ में सूत्र रूप में उपलब्ध है। अत: इसे सूची ग्रंथ भी कहा जा सकता है। यह सूत्र ग्रंथ जंजीर के समान है, कही न कही से संबंध है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज इस ग्रंथ को जैन धर्म की चाबी कहते हैं। इसकी रचना सौराष्ट्र देश के ऊर्जयन्त पर्वत अर्थात गिरनार सिद्ध क्षेत्र में हुई। जो कम अक्षरों में पूर्ण अर्थ बता दे उसे सूत्र कहते हैं। जिसके पेट में अनंत गूढ़ अर्थ है वह सूत्र है। सूत्र अर्थात गागर में सागर भरना। सूत्र की रचना में आधा अक्षर कम होने पर सूत्रकार को पुत्र जन्मोत्सव के समान हर्ष होता है। जैसे- सूत्र अर्थात धागा में पिरोई सुई गुमती नहीं है, वैसे ही सूत्र का पाठी दुर्गति में भ्रमता नहीं है। सूत्र मात्र संकेत देता है, व्याख्या नहीं, व्याख्या बाद में होती है। यह ग्रंथ सूत्र रूप में है, इसलिए इसका ''सूत्र'' नाम सार्थक है। ''तत्त्वार्थ'' नाम सार्थक है, क्योंकि इसमे सात तत्त्वों का वर्णन, जो कि दस अध्यायों में है। प्रथम चार अध्यायों में जीव तत्त्व, पाँचवे अध्याय में अजीव तत्त्व, छठवें एवं सातवें अध्याय में आस्रव तत्त्व, आठवें अध्याय में बंध तत्त्व, नौवे अध्याय में संवर व निर्जरा तत्त्व और दसवें अध्याय में मोक्ष तत्त्व का वर्णन है। इसका अपरनाम ''मोक्ष शास्त्र'' है क्योंकि प्रारंभ मोक्षमार्ग से एवं अन्त में भी मोक्ष का वर्णन है। तत्त्वार्थ सूत्र में सामान्य से चारों अनुयोगों का वर्णन है। प्रथमानुयोग तीसरे अध्याय में षट्कालों का वर्णन है। करणानुयोग तीसरा एवं चौथा अध्याय, चरणानुयोग- छठवां, सातवां, नौवा एवं दसवां अध्याय, द्रव्यानुयोग-पहला, दूसरा, पाँचवाँएवं आठवाँ अध्याय। तत्त्वार्थ सूत्र पर 16 टीकायें लिखी गई हैं।

तत्त्वार्थसूत्र श्री मदुमास्वामी विरचितम्

मङ्गलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद् गुणलब्धये।।

अथ प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।। 1।। तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।। 2।। तन् निसर्गादधिगमाद्वा ।। 3।। जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।। 4।। नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्तन्न्यासः ।।5।।प्रमाण-नयै-रधिगमः ।।6।।निर्देश- स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति विधानतः ।। 7।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च ।।8।।मति-श्रुता-वधि-मनः पर्यय केवलानि ज्ञानम् ।।9।।तत्प्रमाणे ।।10।। आद्ये परोक्षम् ।। 11।। प्रत्यक्षमन्यत् ।। 12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ता-भिनि-बोध-इत्य-नर्थान्तरम् ।।13।।तदिन्द्रिया-निन्द्रिय-निमित्तम् ।।14।।अवग्रहे-हावाय-धारणाः ।।15।।बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृता-नुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम् ।।16।।अर्थस्य ।।17।। व्यञ्जनस्यावग्रहः ।।18।।न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम् ।।19।।श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम् ।।20।।भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम् ।।21।।क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ।।22।।ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ।।23।। विशुद्ध्य- प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।।24।।विशुद्धि क्षेत्र स्वामि विषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ।।25।।मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ।।26।।रूपिष्ववधेः ।।27।।तदनन्त भागे मनः पर्ययस्य ।।28।। सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।। 29।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।। 30।।मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।31।।सदसतो-रवि-शेषाद्यदृच्छोप-लब्धे-रुन्मत्तवत् ।। 32।। नैगम-संग्रहव्यवहा-रर्जु-सूत्र-शब्द-समभि-रूढैवंभूता नयाः ।। 33।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) प्रथमोऽध्यायाय नमः।।

अथ द्वितीयोऽध्यायः

औप-शमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व मौदयिक-पारिणामिकौ च ।। 1।। द्वि-नवाष्टा-दशैक-विंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम् ।।2।। सम्यक्त्व-चारित्रे ।।3।। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणि च ।।4।। ज्ञाना-ज्ञान-दर्शन-लब्धयश्-चतुस्त्रि-त्रि पञ्च भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च ।।5।। गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शना- ज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्- चतुस्त्र्ये-कैकैकैक-षड्भेदाः ।।6।। जीव-भव्या-भव्यत्वानि च ।। 7 ।। उपयोगो लक्षणम् ।। 8।। स द्विविधोष्ट-चतुर्भेदः ।। 9।। संसारिणो मुक्ताश्च ।। 10।। समनस्कामनस्काः ।। 11।। संसारिणस्त्रस-स्थावराः ।। 12।। पृथिव्यप्तेजो-वायु वनस्पतयः स्थावराः ।। 13।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ।। 14।। पञ्चेन्द्रियाणि ।। 15।। द्विविधानि ।। 16।। निर्वृत्युप-करणे-द्रव्येन्द्रियम् ।। 17।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।। 18।। स्पर्शन रसन-घ्राण-चक्षुः श्रोत्राणि ।। 19।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ।। 20।। श्रुतमनिन्द्रि-यस्य ।।21।।वनस्पत्यन्ताना-मेकम् ।।22।।कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीना-मेकैक-वृद्धानि ।। 23।। संज्ञिनः समनस्काः ।। 24।। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।। 25।। अनुश्रेणि गतिः ।। 26।। अविग्रहा जीवस्य ।। 27।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।। 28।। एक-समया-विग्रहा ।। 29।। एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ।। 30।। सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ।।31।।सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।। 32।। जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः ।। 33।। देव-नारकाणा-मुपपादः ।। 34।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।। 35।। औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि-शरीराणि ।36।। परं परं सूक्ष्मम् ।। 37।। प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं-प्राक् तैजसात् ।। 38।। अनन्त गुणे परे ।। 39।। अप्रतीघाते ।। 40।। अनादि सम्बन्धे च ।। 41।। सर्वस्य ।। 42।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना[1]-चतुर्भ्यः ।। 43।। निरुप-भोग-मन्त्यम् ।। 44।। गर्भ-सम्मूर्च्छनज-माद्यम् ।। 45।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।। 46।। लब्धिप्रत्ययं च ।। 47।। तैजस-मपि ।। 48।। शुभं विशुद्ध-मव्याघाति चाहारकं प्रमत्त संयतस्यैव ।।49।। नारक-सम्मूर्च्छिनो नपुसंकानि ।।50।। न देवाः ।।51।।शेषास्त्रिवेदाः ।।52।।औपपादिक-चरमोत्तम-देहा-संख्येय-वर्षा-युषोऽनप-वर्त्या-युषः ।।53।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) द्वितीयोऽध्यायाय नमः।।

पाठान्तर-1 कस्या

अथ तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा-भूमयो घनाम्बु-वाता-काश-प्रतिष्ठाः सप्ता-धोऽधः ।। 1।। तासु त्रिंशत्पञ्च-विंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक नरक-शत-सहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।। 2।। नारका नित्या-शुभतर-लेश्या परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ।। 3।। परस्परो-दीरित-दुःखाः ।। 4।। संक्लिष्टासुरो-दीरित-दुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ।।5।। तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।। 6।। जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभ-नामानो द्वीप- समुद्राः ।। 7।। द्वि-र्द्वि र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्वपरिक्षेपिणो वलया-कृतयः ।।8।। तन्मध्ये-मेरु नाभि- र्वृत्तोयोजन-शत-सहस्र विष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।9।। भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्य-वतैरा-वत-वर्षाः क्षेत्राणि ।।10।। तद्-विभाजिनः पूर्वा--परायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ।। 11।। हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ।। 12।। मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य विस्ताराः ।। 13।। पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका हृदास्तेषा-मुपरि ।। 14।। प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध विष्कम्भो हृदः ।। 15।। दशयोजनावगाहः ।। 16।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।। 17।। तद्-द्विगुण-द्विगुणा हृदाः पुष्कराणि च ।। 18।। तन्-निवासिन्यो देव्यः श्री ह्री धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक परिषत्काः ।। 19।। गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरि-कान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।। 20।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।। 21।। शेषास्त्व-परगाः ।। 22।। चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृत्ता-गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः ।। 23।। भरतः षड् विंशति-पञ्च योजन-शत-विस्तारः षट्चैकोन विंशति भागा योजनस्य ।। 24।। तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ।। 25।। उत्तरा दक्षिण तुल्याः ।। 26।। भरतैरावतयो-र्वृद्धि ह्रासौ षट् समयाभ्या-मुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।। 27।। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।। 28।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक-दैव-कुरवकाः ।। 29।। तथोत्तराः ।। 30।। विदेहेषु संख्येय कालाः ।। 31।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य-नवति शतभागः ।। 32।। द्विर्धातकी-खण्डे ।। 33।। पुष्करार्धे च ।। 34।। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।। 35।। आर्या म्लेच्छाश्च ।। 36।। भरतैरावत-विदेहाः-कर्म-भूमयोऽन्यत्र देव-कुरूत्तर-कुरुभ्यः ।। 37।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।। 38।। तिर्यग्योनिजानां च ।। 39।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) तृतीयोऽध्यायाय नमः।।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्णिकायाः ।। 1।। आदितस् त्रिषु पीतान्त-लेश्याः ।। 2।। दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाःकल्पोप-पन्न-पर्यन्ताः ।।3।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारि-षदात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ।। ४।। त्रायस्त्रिंशलोक-पाल-वर्ज्या व्यन्तर ज्योतिष्काः ।।5।।पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।6।।काय-प्रवीचारा आ ऐशानात् ।। 7।। शेषाः स्पर्श रूप-शब्द-मनः -प्रवीचाराः ।। 8।। परेऽप्रवीचाराः ।। 9।। भवन-वासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्तनितोदधि द्वीप- दिक्कुमाराः ।।10।।व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः ।।11।।ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्र-मसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णकतारकाश्च ।। 12।। मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृ-लोके ।। 13।। तत्कृतः कालविभागः ।। 14।।बहिरवस्थिताः ।।15।।वैमानिकाः ।।16।।कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।। 17।। उपर्युपरि ।। 18।। सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयो-रारणा-च्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त जयन्ता-परा-जितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च ।। 19।। स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रिया-वधि-विषयतोऽधिकाः ।। 20।। गति-शरीर-परिग्रहाभिमानतो हीनाः ।।21।।पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रिशेषेषु ।।22।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।23।।ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ।।24।।सारस्वता-दित्य-वह्न्यरुणगर्द-तोय-तुषिताव्याबाधा रिष्टाश्च ।। 25।। विजयादिषु द्विचरमाः ।। 26।। औप-पादिक मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।। 27।। स्थिति-रसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्ध हीन-मिताः ।। 28।। सौधर्मैशानयोः सागरोपमेअधिके ।।29।।सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त ।।30।। त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि तु ।।31।।आरणाच्युता दूर्ध्व मेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।। 32।। अपरा-पल्योपम मधिकम् ।। 33।। परतः परतः पूर्वापूर्वानन्तरा ।।34।।नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।35।।दश वर्ष सहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।।भवनेषु च ।।37।।व्यन्तराणां च ।।38।।परा पल्योपम-मधिकम् ।।39।। ज्योतिष्काणां च ।। 40।। तदष्टभागोऽपरा ।। 41।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरो-पमाणि सर्वेषाम् ।।42।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) चतुर्थोऽध्यायाय नमः।।

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अजीव-काया-धर्मा-धर्मा-काश-पुद्गलाः ।। 1।। द्रव्याणि ।। 2।। जीवाश्च ।। 3।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।। 4।। रूपिणः पुद्गलाः ।। 5।। आ आकाशा-देक-द्रव्याणि ।। 6।। निष्क्रियाणि च ।।7।।असंख्येयाः प्रदेशा धर्मा-धर्मैक-जीवानाम् ।।8।।आका-शस्यानन्ताः ।। 9।। संख्येया-संख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।। 10।। नाणोः ।। 11।। लोका-काशेऽवगाहः ।। 12।। धर्मा-धर्मयोः कृत्स्ने ।। 13।। एक-प्रदेशा-दिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।। 14।। असंख्येय-भागादिषु जीवानाम् ।। 15।। प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।। 16।। गति-स्थित्युपग्रहौ धर्मा-धर्मयो-रुपकारः ।। 17।। आकाशस्या-वगाहः ।। 18।। शरीर-वाङ् मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् ।। 19।। सुख-दुःख-जीवित-मरणो-पग्रहाश्च ।। 20।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।। 21।। वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वा-परत्वे च कालस्य ।। 22।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ।।23।।शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छाया तपोद्योत वन्तश्च ।। 24।। अणवः स्कन्धाश्च ।। 25।। भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ।। 26।। भेदादणुः ।। 27।। भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ।। 28।। सद्द्रव्य-लक्षणम् ।। 29।। उत्पादव्ययध्रौव्य युक्तं सत् ।। 30।। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।। 31।। अर्पिता-नर्पित-सिद्धेः ।। 32।। स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः ।। 33।। न जघन्य-गुणानाम् ।। 34।। गुण-साम्ये सदृशानाम् ।। 35।। द्व्यधिकादि-गुणानां तु ।। 36।। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।। 37।। गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ।। 38।। कालश्च ।। 39।। सोऽनन्त-समयः ।।40।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।41।। तद्भावः परिणामः ।।42।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) पञ्चमोऽध्यायाय नमः।।

अथ षष्ठोऽध्यायः

काय-वाङ् -मनः कर्म योगः ।। 1।। स आस्रवः ।। 2।। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।।3।।सकषाया- कषाययोः साम्परायि - केर्या-पथयोः ।।4।।इन्द्रिय-कषाया-व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्च पञ्चविंशति संख्याः पूर्वस्य भेदाः ।।5।। तीव्र-मन्द-ज्ञाता-ज्ञात-भावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।। 6।। अधिकरणं जीवा-जीवाः ।। 7।। आद्यं संरम्भ-समा-रम्भा-रम्भ-योग-कृत-कारितानु-मत-कषाय-विशेषैस्-त्रिस्-त्रिस्-त्रिश्-चतुश्चैकशः ।।8।।निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम् ।। 9।। तत्प्रदोष निह्नव मात्सर्यान्तराया सादनोपघाता ज्ञान दर्शनावरणयोः ।।10।।दुःख शोक-तापा-क्रन्दन-वध-परिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्यसद्‌वेद्यस्य[1] ।। 11।। भूतव्रत्यनु-कम्पादान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौच-मिति सद्-वेद्यस्य ।। 12।। केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवा-वर्णवादोदर्शनमोहस्य ।।13।। कषायोदयात्तीव्र-परिणामश्चारित्र-मोहस्य ।। 14।। बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्या-युषः ।। 15।। माया तैर्यग्योनस्य ।। 16।। अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ।। 17।।स्वभाव-मार्दवं च।। 18।। निःशील व्रतत्वं च सर्वेषाम् ।। 19।।सराग-संयम-संयमासंयमा-कामनिर्जरा-बाल-तपांसि-दैवस्य ।।20।। सम्यक्त्वं च ।।21।।योगवक्रता विसंवादनं- चा-शुभस्य-नाम्नः ।।22।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।23।।दर्शन- विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शील-व्रतेष्वनती चारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधु समाधि-वैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्य बहुश्रुत प्रवचन भक्ति-रावश्यका-परिहाणिर्मार्ग प्रभावना प्रवचन-वत्सलत्व-मिति तीर्थकरत्वस्य ।।24।।परात्म-निन्दा प्रशंसे सदसद् गुणोच्छादनोद्-भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।25।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्य-नुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26।।विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।27।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) षष्ठोऽध्यायाय नमः।।

पाठान्तरः- 1 स्थान्यसद्‌वेद्यस्य

अथ सप्तमोऽध्यायः

हिंसानृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।1।।देश-सर्वतोऽणु-महती ।।2।।तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।। 3।। वाङ् मनो-गुप्तीर्या-दान-निक्षेपण-समित्या-लोकित-पान-भोजनानि पञ्च।। 4।। क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्य-नुवीचि भाषणं च पञ्च ।।5।।शून्यागार विमोचिता-वास-परो-परोधा-करण-भैक्ष्य-शुद्धि-सधर्मा विसंवादाः पञ्च।। 6।। स्त्रीराग-कथाश्रवण-तन्मनो-हराङ्ग-निरीक्षण-पूर्व-रतानुस्मरण वृष्येष्टरस-स्वशरीरसंस्कार-त्यागाः पञ्च ।। 7।। मनोज्ञा-मनोज्ञेन्द्रिय-विषय राग- द्वेष वर्जनानि पञ्च।। 8।। हिंसा-दिष्विहा-मुत्रा-पाया-वद्य दर्शनम् ।।9।। दुःखमेव वा ।। 10।। मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्व-गुणाधिक क्लिश्य-माना-विनेयेषु ।। 11।। जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ।। 12।। प्रमत्त-योगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा ।। 13।। अस-दभिधान-मनृतम् ।। 14।। अदत्ता-दानं स्तेयम् ।। 15।। मैथुन-मब्रह्म ।। 16।। मूर्च्छा परिग्रहः ।। 17।। निश्शल्यो व्रती ।। 18।। अगार्यनगारश्च ।। 19।। अणुव्रतोऽगारी ।। 20।। दिग्देशा-नर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोप-भोग-परिभोग-परिमाणा-तिथि- संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च ।।21।।मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22।।शंका-कांक्षा-विचिकित्सान्यदृष्टि-प्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतीचाराः ।। 23।। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।। 24।। बन्ध-वधच्छेदाति-भारारोपणान्न-पान-निरोधाः ।। 25।। मिथ्योपदेश रहोभ्या-ख्यान-कूट-लेख-क्रियान्यासाप-हार-साकारमन्त्र-भेदाः ।। 26।। स्तेन-प्रयोग-तदाहृता-दान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्-मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः।। 27।। परविवाह-करणेत्वरिका-परिगृहिता-परिगृहिता-गमना-नङ्गक्रीडा-काम-तीव्राभिनिवेशाः ।।28।।क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धनधान्य-दासी-दास-कुप्य-भाण्ड[1] प्रमाणातिक्रमाः ।। 29।। ऊर्ध्वा- धस्तिर्यग्व्यति-क्रम क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तरा-धानानि ।। 30।। आनयन-प्रेष्य प्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल क्षेपाः ।। 31।।कन्दर्प- कौत्कुच्य-मौखर्या समीक्ष्याधि-करणोपभोग-परि-भोगानर्थक्यानि ।।32।। योग-दुष्प्रणि-धाना-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि ।।33।। अप्रत्य-वेक्षिता-प्रमार्जितोत्-सर्गादान-संस्तरोप-क्रमणा-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि ।। 34।। सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्राभिषव-दुःपक्वाहाराः ।। 35।। सचित्त-निक्षेपा-पिधान-पर-व्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ।। 36।। जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबंध निदानानि ।। 37।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।38।। विधिद्रव्य दातृपात्र-विशेषात्तद्विशेषः ।।39।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) सप्तमोऽध्यायाय नमः।।

1.सिरिभूवलय (आचार्य कुमेन्दु) में भाण्ड शब्द है।

अथ अष्टमोऽध्यायः

मिथ्या-दर्शना-विरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः ।। 1।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।। 2।। प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्-तद्विधयः ।। 3।। आद्यो ज्ञान-दर्शना-वरण-वेदनीय-मोहनी-यायु-र्नाम-गोत्रान्तरायाः ।। 4।। पञ्च नवद्व्यष्टा-विंशति-चतुर्द्वि-चत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च भेदा यथाक्रमम् ।। 5।। मति-श्रुता-वधिः-मनःपर्यय-केवलानाम् ।। 6।। चक्षु-रचक्षु-रवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला स्त्यानगृद्धयश्च ।। 7।। सदसद्-वेद्ये ।। 8।। दर्शन-चारित्र-मोहनीया-कषाय-कषाय-वेदनी-याख्यास्-त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्य कषाय-कषायौ-हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्नपुंसक-वेदा-अनन्तानु-बन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः ।। 9।। नारक तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ।। 10।। गति-जाति- शरीराङ्गो-पाङ्ग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानु पूर्व्यागुरुलघूपघात-परघातातपो-द्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येक शरीर त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति स्थिरादेय-यशः कीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च ।। 11।। उच्चैर्नीचैश्च ।। 12।। दान-लाभ भोगोपभोग-वीर्याणाम् ।। 13।। आदितस्-तिसृणा-मन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटी कोट्यः परा स्थितिः ।। 14।। सप्तति-र्मोहनीयस्य ।। 15।। विंशति-र्नाम-गोत्रयोः ।। 16।। त्रयस्-त्रिंशत्सागरो-पमाण्यायुषः ।। 17।। अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ।। 18।। नाम गोत्रयो-रष्टौ ।। 19।। शेषाणा-मन्तर्मुहूर्ता ।। 20।। विपाकोऽनुभवः ।। 21।। स यथानाम ।। 22।। ततश्च निर्जरा ।। 23।। नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग- विशेषात् सूक्ष्मैक-क्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त प्रदेशाः ।। 24।। सद्वेद्य शुभायुर्नाम गोत्राणि पुण्यम् ।। 25।। अतोऽन्यत् पापम् ।। 26।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) अष्टमोऽध्यायाय नमः।।

अथ नवमोऽध्याय:

आस्रव-निरोधः संवरः ।। 1।। स गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः ।। 2।। तपसा निर्जरा च ।। 3।। सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ।। 4।। ईर्या-भाषैषणादान-निक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।। 5।। उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाकिञ्चन्य ब्रह्मचर्याणि धर्मः ।। 6।। अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वा-शुच्यास्रव संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्या-तत्वानु-चिन्तन-मनुप्रेक्षाः ।। 7।। मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।। 8।। क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंश-मशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याक्रोश-वध-याचना[1] लाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ।।9।। सूक्ष्म-साम्परायछद्मस्थ-वीतरागयोश्चतुर्दश ।। 10।। एकादश जिने ।। 11।। बादर-साम्पराये सर्वे ।। 12।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।। 13।। दर्शन-मोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।। 14।। चारित्र मोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कारपुरस्काराः।। 15।। वेदनीये शेषाः ।। 16।। एकादयो भाज्या युगपदे-कस्मिन्नैकोनविंशतेः ।। 17।। सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहार विशुद्धि-सूक्ष्म साम्पराय यथाख्यात-मिति- चारित्रम् ।। 18।। अनशनावमौदर्य-वृत्ति-परिसंख्यान-रस-परित्याग-विविक्त-शय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः ।। 19।। प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्यस्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरं ।। 20।। नव-चतुर्दश- पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।। 21।। आलोचना प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापनाः ।।22।। ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः ।।23।। आचार्योपाध्याय-तपस्वि शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम् ।। 24।। वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ।। 25।। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।। 26।। उत्तम संहननस्यैकाग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यान मान्तर्मुहूर्तात् ।।27।। आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि ।। 28।। परे मोक्ष हेतू।। 29।। आर्त्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति समन्वाहारः ।। 30।। विपरीतं मनोज्ञस्य ।। 31।। वेदनायाश्च ।। 32।। निदानं च ।। 33।। तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम् ।। 34।। हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्र-मविरत-देशविरतयोः ।। 35।। आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ।। 36।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।। 37।। परे केवलिनः ।। 38।। पृथक्त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत-क्रिया निवर्तीनि ।। 39।। त्र्येक-योग-काय-योगा-योगानाम् ।। 40।। एकाश्रये सवितर्क वीचारे पूर्वे ।। 41।। अवीचारं द्वितीयम् ।। 42।। वितर्कः श्रुतम् ।। 43।। वीचारोऽर्थ व्यञ्जन योग संक्रान्तिः ।। 44।। सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशान्त-मोह क्षपक-क्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येय गुण निर्जराः ।। 45।। पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः ।। 46।। संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थलिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः ।। 47।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) नवमोऽध्यायाय नमः।।

पाठान्तर 1 याञ्चा पाठ भी मिलता है।

अथ दशमोऽध्यायः

मोह-क्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ।। 1 ।। बन्ध हेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः ।। 2 ।। औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ।। 3 ।। अन्यत्र केवल सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ।। 4 ।। तदनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।। 5 ।। पूर्व प्रयोगा- दसङ्गत्वाद्-बन्धच्-छेदात्तथा-गति-परिणामाच्च ।। 6 ।। आविद्धकुलाल-चक्रवद्-व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीज वदग्नि शिखावच्च ।। 7 ।। धर्मास्तिकायाभावात् ।। 8 ।। क्षेत्र-काल-गति-लिङ्ग तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक बुद्ध बोधित-ज्ञानावगाहनान्तर-संख्याल्प बहुत्वतः साध्याः ।। 9 ।।

इति तत्त्वार्थसूत्रे (मोक्षशास्त्रे) दशमोऽध्यायाय नमः ।।

अक्षर-मात्र पद-स्वर हीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।1।।
दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्या-दुप-वासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः।।2।।
तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्ध-पिच्छोप-लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र-संजात-मुमास्वामी-मुनीश्वरम्।।3।।
पढम चउक्के पढमं पञ्चमए जाण पुग्गलं तच्च।
छह सत्तमेहि आस्सव अट्ठमे बंध णायव्वो।।4।।
णवमे संवर णिज्जर दहमे मोक्खं वियाणेहि।
इह सत्त तच्च भणियं दह सुत्ते मुणिवरिंदेहिं।।5।।
जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं।।6।।
तवयरणं वयधरणं संजमसरणं च जीव-दया करणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेइ।।7।।
कोटिशतं द्वादशचैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्य, मेतच्छ्रुतं पञ्चपदं नमामि।।8।।
अरहंत भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवहिं सिरसा।।9।।
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्ष-मार्गोपदेशकाः।।10।।